

**आर्य
જીવન**



जીવન

संस्कृति संરक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
पी००८-ठेलुगु દ્વારા એસ્ક્રીપ્ટ ફિલ્મ્સ

Website : <http://www.aryasabhaapts.org>

Narendra Bhavan Telephone : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.- तेलंगाना का साधारण अधिवेशन 11 जून 2023 को सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती के 200 वीं जन्म जयन्ति सन्दर्भ में ग्रान्त की प्रत्येक आर्य समाज द्वारा 200 परिवारों से-व्यक्तियों से सम्पर्क करने का संकल्प । हर परिवार को या व्यक्ति को स्वामी दयानन्द सरस्वती की जीवन व दर्शन की विशेषताओं से परिचित कराना तथा सम्बन्धित छोटी सी पुस्तिका प्रदान करने का निर्णय किया गया । जहाँ भी सम्भव हो वहाँ पर्यावरण प्रदूषण निवारण हेतु यज्ञ करवाकर पौथारोपण करने का भी संकल्प लिया है । 200वीं जयन्ति के सन्दर्भ में हर आर्य समाज द्वारा पौथा लगाया जाएगा तथा कम से कम कुल 1,000 पौथे लगाने का निर्णय लिया ।



सभा के चुनाव फरवरी २०२४ में कराने का निर्णय । आर्य समाजों विशेष आग्रह है कि निर्देशित सूचनाओं का अवश्य पालन करे और समाज को विधिवत ढंग से चलाए । आगे आगे सूचनाओं का पालन करते रहे ।

पूर्वजों की याद

-भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य

हमारे जीवन में कुछ की याद इतनी गहरी होती है कि जो भुलाए नहीं भूलती। रह-रहकर उनकी याद ताजा हो उठती है। इन्हीं में एक याद किसी पूर्वज की भी हो सकती है। पूर्वज शब्द का अर्थ है-पूर्व+ज-अर्थात् जो हमसे पहले (इस परिवार, क्षेत्र में) पैदा हुआ हो। जैसे कि हमारे परिवार में दादा-दादी, माता-पिता। यह एक प्रकृति का अनिवार्य नियम है कि आज पैदा होने वाला हर मनुष्य प्रकृति की प्रक्रिया के अनुसार अपने माता-पिता के द्वारा ही दुनिया में आता है। यह आना कोई सरल-सहज घटना नहीं है। हर बच्चे वाला एक लम्बा अनुभव रखता है कि किसी शिशु का बालक-किशोर-युवा (आदि रूप में विकसित) होना, एक लम्बी-चौड़ी संघर्षभरी मेहनत से होता है। प्रत्येक के पालन-शिक्षण-योग्यता प्राप्ति में पल-पल का योगदान होता है। इसीलिए मनुस्मृतिकार ने कहा है-बच्चों के पालन-पोषण-वर्धन के लिए माता-पिता जो परिश्रम-योगदान-संघर्ष करते हैं। उसका बदला सन्तान सैकड़ों सालों में भी नहीं कर सकती है। हाँ, हमारी परम्परा में पितृयज्ञ के द्वारा इसको समझाने और इस ऋण को कुछ हलका करने का एक सन्देश दिया है। पितृयज्ञ-पंचमहायज्ञों में से तीसरा है, इन पांचों को प्रतिदिन करने का विधान है।

हमारी सत्ता, हमारा होना, जीना पूर्वजों के परिश्रम का प्रत्यक्ष प्रमाण है। हम अपने-अपने परिवार का हिस्सा हैं। परिवार समाज की ईकाई है अर्थात् परिवारों के मेल से ही समाज सामने आता है। अतः पूर्वज अपने परिवार की परम्परा को आगे बढ़ाकर समाज की ही सेवा करते हैं। उनकी यह समाज सेवा ही पूर्वजों के परिश्रम की पहचान है। आइए ! इसी भावना को सामने रखकर

संगठन सूक्त के इस मन्त्र पर कुछ विचार करें। इस मन्त्र का मूल सन्देश है- ‘पूर्वजों की भाँति तुम, अपने कर्तव्य के मानी बनो’ यह वेदमन्त्र है-

संगच्छध्यं संवदध्यं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं वथापूर्वे सं जानाना उपासते ॥

-ऋ. १०.१९९.२

सामान्य शब्दार्थ-तथा=जैसे पूर्वे=हम से पूर्ववर्ती देवा:=समझदार, दिव्यपुरुष जानानना:=सचाई को समझते हुए भागम्=अपने हिस्से के कर्म को सम् उपासते=करते हैं, निभाते हैं। वैसे ही तुम भी संगच्छध्यम्=मिलकर चलो, जियो संवदध्यम्=मिलकर चलो, जियो संवदध्यम्=सामाजिक भावना से बोलो। इसके लिए वः=तुम जानने वालों के मनांसि=मन (संजानताम्=(भवतु) सहमत हों, तैयार हों।

प्रसंग प्राप्त शब्दार्थ-यथा=जैसे पूर्वे=हम से पहले वाले देवा:=सफल पूर्वज, महापुरुष जानानना:=अपने सामाजिक कर्तव्य कर्म को समझते हुए भागम्=अपने-अपने हिस्से के कार्य को कर्तव्य भावना से सम् उपासते=करते हैं। (तथा=उसी प्रकार यूयम्=तुम पीछे आने वाले भी) संगच्छध्यम्=सामाजिक भावना को ध्यान में रखकर सामाजिक व्यवहार को करो, साझी चाल चलो। अर्थात् समाज की व्यवस्था को बनाए रखने वाला जीवन जिओ। संवदध्यम्=सामाजिक सामज्जस्य के अनुकूल बोल बोलो। अर्थात् मेल-जोल को बढ़ाने वाले बोल बोलो। इसकी सिद्धि के लिए वः=तुम जानताम् मनांसि=मन सं (भवतु) सहमत हों अर्थात् एकदर्थ तुम सब अपने मनों को समझाओ, तैयार करो।

व्याख्या-तैत्तिरीय उपनिषद् का प्रथम भाग शिक्षावल्ली है। जिसमें पाठ्यक्रम, शिष्य-

शिक्षक सम्बन्ध, लक्ष्य आदि की चर्चा है। इसके अन्तिम भाग में शिक्षा समाप्ति पर स्नातक को शिक्षा का सार, दीक्षात् संस्कार के समान समझाया गया है। वहाँ (जीवन में लाए जाने वाले ‘संगच्छध्यम्’ मन्त्र से) ‘सत्यं वद, धर्मं चर’ जैसे प्रमुख सन्देश हैं। इसी के अन्तिम अंश में-एष आदेशः एष उपदेशः-कहा है। अर्थात् यही जीवन का निचोड़ है, अनिवार्य तत्त्व है। ठीक इसी उपनिषद् की तरह १०५०० से भी अधिक मन्त्रों वाले ऋग्वेद का अन्तिम सूक्त संगठन=अनुशासन है। जो चार मन्त्रों का ही है, वहाँ का यह दूसरा मन्त्र है सम्भवतः इसी सूक्त के सामाजिक सन्देश को सामने रखकर आर्य समाज का दशम नियम सावधान कर रहा है- “सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए।” -अर्थात् समाज के अनुशासन का सदा पालन करना चाहिए।

भावार्थ-जैसे महापुरुष अपना कर्तव्य मानकर समाज सेवा को साधना रूप में करते हैं, वैसे ही तुम भी सामाजिक भावना से परस्पर मिलकर चलो अर्थात् जीवन जियो, आपस में इसी भावना से बोलो और इसके लिए तुम सब अपने मनों को समझाओ, तैयार करो। कुछ पूर्वज केवल परिवार तक जुटे रहते हैं और कुछ परिवार के साथ ही साथ गांव की भी सेवा करते हैं। कुछ पूर्वज परिवार और स्थानीय संस्था की संभाल करते हैं और कुछ इलाके की भी साथ-साथ सेवा निभाते हैं। कुछ इससे भी आगे बढ़कर प्रान्त, देश, विदेश की सेवा को अपने जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं। इसी प्रकार वह-वह पूर्वज अपनी सेवा, साधना के अनुसार याद किए जाते हैं।

शूरता की मिसाल-पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर

-डॉ विवेक आर्य

पंडित लेखराम इतिहास की उस महान हस्तियों में शामिल हैं जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर प्राण न्योछावर कर दिए। जीवन के अन्तिम क्षण तक आप वैदिक धर्म की रक्षा में लगे रहे। आपके पूर्वज महाराजा रंजित सिंह भी फौज में थे। इसलिए वीरता आपको विरासत में मिली थी। बचपन से ही आप स्वाभिमानी और दृढ़ विचारों के थे। एक बार आपको पाठशाला में प्यास लगी। मौलवी से घर जाकर पानी पीने की इजाजत मांगी। मौलवी ने जूठे मटके से पानी पीने को कहा। आपने न दोबारा मौलवी से घर जाने की इजाजत मांगी और न ही जूठा पानी पिया। सारा दिन प्यासा ही बिता दिया। पढ़ने का आपको बहुत शोक था। मुन्शी कर्नैयालाल अलाख्यारी की पुस्तकों से आपको स्वामी दयानन्द जी का पता चला। अब लेखराम जी ने ब्रह्मि दयानन्द के सभी ग्रन्थों का स्वाध्याय आरम्भ कर दिया। पेशावर से चलकर अजमेर स्वामी दयानन्द के दर्शनों के लिए पंडित जी पहुँच गए। जयपुर में एक बंगाली सज्जन ने पंडित जी से एक प्रश्न किया था कि आकाश भी व्यापक है और ब्रह्मा भी। दो व्यापक किस प्रकार एक साथ रह सकते हैं? पंडित जी से उसका उत्तर नहीं बन पाया था। पंडित जी ने स्वामी दयानन्द से वही प्रश्न पूछा। स्वामी जी ने एक पथर उठाकर कहा की इसमें अग्नि व्यापक है या नहीं? मैंने कहाँ की व्यापक है, फिर कहाँ की क्या मिट्टी व्यापक है? मैंने कहाँ की व्यापक है, फिर कहाँ की क्या जल व्यापक है? मैंने कहाँ की व्यापक है, फिर कहाँ की क्या आकाश और वायु? मैंने कहाँ की व्यापक है, फिर कहाँ की क्या परमात्मा व्यापक है? मैंने कहाँ की व्यापक हैं। वास्तव में बात

यहीं है की जो जिससे सूक्ष्म होती है, वह उसमें व्यापक हो जाती है। ब्रह्मा चूंकि सबसे अति सूक्ष्म है। इसलिए वह सर्व व्यापक है। यह उत्तर सुन कर पंडित जी की जिज्ञासा शान्त हो गई। आगे पंडित जी ने पूछा जीव ब्रह्मा की भिन्नता में कोई वेद प्रमाण बताएँ। स्वामी जी ने कहाँ यजुर्वेद का ४०वां अध्याय सारा जीव ब्रह्मा का भेद बतलाता है। इस प्रकार अपनी शंकाओं का समाधान कर पंडित जी वापस आकर वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार में लग गए।

शुद्धि के रण में-कोट छुट्टा डेरा खान (अब पाकिस्तान) में कुछ हिन्दू युवक मुसलमान बनने जा रहे थे। पंडित जी के व्याख्यान सुनने पर ऐसा रंग चढ़ा की आर्य बन गए और इस्लाम को तिलांजलि दे दी। इनके नाम थे महाशय चौखानन्द, श्री छबीलदास व महाशय खूबचन्द जी, जब तीनों आर्य बन गए तो हिन्दुओं ने उनका सामाजिक बहिष्कार कर दिया। कुछ समय के बाद महाशय छबीलदास की माता का देहान्त हो गया। उनकी अर्थी को उठाने वाले केवल ये तीन ही थे। महाशय खूबचन्द की माता उन्हें वापस ले गई। आप कमरे का ताला तोड़ कर वापिस संस्कार में आ मिले। तीनों युवकों ने वैदिक संस्कार से दाह कर्म किया। पौराणिकों ने एक चाल चली यह प्रसिद्ध कर दिया कि आर्यों ने माता के शव को भुनकर खा लिया हैं। यह तीनों युवक मुसलमान बन जाए तो हिन्दुओं को कोई फर्क नहीं पड़ता था। परन्तु पंडित लेखराम की कृपा से वैदिक धर्मी बन गए, तो दुश्मन बन गए। इस प्रकार की मानसिकता के कारण तो हिन्दू आज भी गुलामी की मानसिकता में जी रहे हैं।

जम्मू के श्री ठाकुर दास मुसलमान

होने जा रहे थे। पंडित जी उनसे जम्मू जाकर मिले और उन्हें मुसलमान होने से बचा लिया। १८९९ में हैदराबाद सिन्ध के श्रीमन्त सूर्यमल की सन्तान ने इस्लाम मत स्वीकार करने का मन बना लिया। पं. पूर्णनिंद जी को लेकर आप हैदराबाद पहुंचे। उस धनी परिवार के लड़के पंडित जी से मिलने के लिए तैयार नहीं थे। पर आप कहाँ मानने वाले थे। चार बार सेठ जी के पुत्र मेवाराम जी से मिलकर यह आग्रह किया की मौलवियों से उनका शास्त्रार्थ करवा दे। मौलवी सव्यद मुहम्मद अली शाह को तो प्रथम बार में ही निरुत्तर कर दिया। उसके बाद चार और मौलवियों से पत्रों से विचार किया। आपने उनके सम्मुख मुसलमान मौलवियों को हराकर उनकी धर्म रक्षा की। वही सिन्ध में पंडित जी को पता चला की कुछ युवक ईसाई बनने वाले हैं। आप वहाँ पहुंच गए और अपने भाषण से वैदिक धर्म के विषय में प्रकाश डाला। एक पुस्तक आदम और इव पर लिख कर बांटी जिससे कई युवक ईसाई होने से बच गए। गंगोह जिला सहारनपुर की आर्य समाज की स्थापना पंडित जी से दीक्षा लेकर कुछ आर्यों ने १८८५ में की थी। कुछ वर्ष पहले तीन अग्रवाल भाई पतित होकर मुसलमान बन गए थे। आर्य समाज ने १८९४ में उन्हें शुद्ध करके वापिस वैदिक धर्मी बना दिया। आर्य समाज के विरुद्ध गंगोह में तूफान ही आ गया। श्री रेतूलाल जी भी आर्य समाज के सदस्य थे। उनके पिता ने उनके शुद्धि में शामिल होने से मन किया पर वे नहीं माने। पिता ने बिरादरी का साथ दिया। उनकी पुत्र से बातचीत बन्द हो गई पर रेतूलाल जी कहाँ मानने वाले थे। उनका कहना था गृह त्याग कर सकता हूँ पर आर्य समाज नहीं छोड़ सकता। इस प्रकार

पंडित लेखराम के तप का प्रभाव था कि उनके शिष्यों में भी वैदिक सिद्धान्त की रक्षा हेतु भावना कूट-कूट कर भरी थी। घासीपुर जिला मुजफ्फरनगर में कुछ चौधरी मुसलमान बनने जा रहे थे। पंडित जी वह एक तय की गई तिथि को पहुँच गए। उनकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और साथ में मूँछें भी थी। एक मौलाना ने उन्हें मुसलमान समझा और पूछा क्यों जी य दाढ़ी तो ठीक है पर इन मुछों का क्या राज है? पंडित जी बोले दाढ़ी तो बकरे की होती है और मूँछें तो शेर की होती है। मौलाना समझ गया की यह व्यक्ति मुसलमान नहीं है। तब पंडित जी ने अपना परिचय देकर शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। सभी मौलानाओं को परास्त करने के बाद पंडित जी ने वैदिक धर्म पर भाषण देकर सभी चौधरियों को मुसलमान बनने से बचा लिया। १८९६ की एक घटना पंडित लेखराम के जीवन से हमें सर्वदा प्रेरणा देने वाली बनी रहेगी। पंडित जी प्रचार से वापिस आए तो उन्हें पता चला की उनका पुत्र बीमार है। तभी उन्हें पता चला की मुस्तफावाद में पाँच हिन्दू मुसलमान होने वाले हैं। आप घर जाकर दो घंटे में वापिस आ गए और मुस्तफावाद के लिए निकल गए। अपने कहाँ की मुझे अपने एक पुत्र से जाति के पाँच पुत्र अधिक प्यारे हैं। पीछे से आपका सवा साल का इकलोता पुत्र चल बसा। पंडित जी के पास शोक करने का समय कहाँ था। आप वापिस आकर वेद प्रचार के लिए वजीरावाद चले गए।

पंडित जी की तर्क शक्ति गजब थीं। आपसे एक बार किसी ने प्रश्न किया कि हिन्दू इतनी बड़ी संख्या में मुसलमान कैसे हो गए? अपने सात कारण बताए-

१) मुसलमान आक्रमण में बलात पूर्वक मुसलमान बनाया गया। २) मुसलमानी राज में जर, जोरू व जर्मीन देकर कई प्रतिष्ठित हिन्दुओं को मुसलमान बनाया गया। ३) इस्लामी कल में उर्दू फरसी की शिक्षा एवं संस्कृत की दुर्गति

के कारण बने। ४) हिन्दुओं में पुनर्विवाह न होने के कारण व सती प्रथा पर रोक लगने के बाद हिन्दू और तो ने मुसलमान के घर की शोभा बढ़ाई तथा अगर किसी हिन्दू युवक का मुसलमान स्त्री से सम्बन्ध हुआ तो उसे जाति से निकाल कर मुसलमान बना दिया गया। ५) मूर्तिपूजा की कुरीति के कारण कई हिन्दू विधर्मी बने। ६) मुसलमानी देशयायों ने कई हिन्दुओं को फंसा कर मुसलमान बने। अगर गहराई से सोचा जाए तो पंडित जी ने हिन्दुओं को जाति रक्षा के लिए उपाय बता दिए हैं, अगर अब भी नहीं सुधरे तो हिन्दू कब सुधरेंगे?

पंडित जी और गुलाम मिर्जा अहमद-पंडित जी के काल में कादियान, जिला गुरुदासपुर पंजाब में इस्लाम के एक नए मत की वृद्धि हुई जिसकी स्थापना मिर्जा गुलाम अहमद ने की थी। इस्लाम के मानने वाले मुहम्मद साहिब को आखिरी पैगम्बर मानते हैं, मिर्जा ने अपने आपको कभी कृष्ण, कभी नानक, कभी ईसा मसीह, कभी इस्लाम का आखिरी पैगम्बर घोषित कर दिया तथा अपने नवीन मत को चलने के लिए नई नई भविष्यवाणियाँ और इल्हामों का ढोल पीटने लगा। एक उदाहरण मिर्जा द्वारा लिखित पुस्तक “वही हमारा कृष्ण” से लेते हैं इस पुस्तक में लिखा है दृ उसने (ईश्वर ने) हिन्दुओं की उन्नति और सुधार के लिए निष्कलं की अवतार को भेज दिया है। जो ठीक उस युग में आया है जिस युग की कृष्ण जी ने पहले से सूचना दे रखी है। उस निष्कलंक अवतार का नाम मिर्जा गुलाम अहमद है। जो कादियान जिला गुरुदास पुर में प्रकट हुए है। खुदा ने उनके हाथ पर सहस्रों निशान दिखाए हैं। जो लोग उन पर ईमान लाते हैं। उनको खुदा ताला बड़ा नूर बख्शता है। उनकी प्रार्थनाएँ सुनता हैं और उनकी सिफारिश पर लोगों के कष्ट दूर करता है। प्रतिष्ठा देता है। आपको चाहिए कि उनकी शिक्षाओं को पढ़ कर नूर प्राप्त करे। यदि कोई सन्देह होतो परमात्मा से प्रार्थना

करे की है परमेश्वर! यदि यह व्यक्ति जो तेरी और से होने की घोषणा करता है और अपने आपको निष्कलंक अवतार कहता है। अपनी घोषणा में सच्चा है तो उसके मानने की हमें शक्ति प्रदान कर और हमारे मन को इस पर ईमान लेने को खोल दे। पुनः आप देखेंगे कि परमात्मा अवश्य आपको परोक्ष निशानों से उसकी सत्यता पर निश्चय दिलवाएगा। तो आप सत्य हृदय से मेरी और प्रेरित हो और अपनी कठिनाइयों के लिए प्रार्थना करावे अल्लाह ताला आपकी कठिनाइयों को दूर करेगा और मुराद पूरी करेगा। अल्लाह आपके साथ हो। पृ. ६, ७, ८ वही हमारा कृष्ण पाठक जन स्वयं समझ गए होंगे कि किस प्रकार मिर्जा अपनी कुटिल नीतियों से मासूम हिन्दुओं को बेवकूफ बनाने की चेष्टा कर रहा था पर पंडित लेखराम जैसे रणवीर के रहते उसकी दाल नहीं गली। पंडित जी सत्य असत्य का निर्णय करने के लिए मिर्जा के आगे तीन प्रश्न रखे।

१) पहले मिर्जा जी अपने इस्लामी खुदा से धारा वाही संस्कृत बोलना सीख कर आर्य समाज के दो सुयोग्य विद्वानों पंडित देवदूत शास्त्री व पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा का संस्कृत वार्तालाप में नाक में दम कर दे। २) ६ दर्शनों में से सिर्फ तीन के आर्य भाष्य मिलते हैं। शेष तीन के अनुवाद मिर्जा जी अपने खुदा से मंगवा ले तो मैं मिर्जा के मत को स्वीकार कर लूँगा। ३) मुझे २० वर्ष से बवासीर का रोग है। यदि तीन मास में मिर्जा अपनी प्रार्थना शक्ति उन्हें ठीक कर दे तो मैं मिर्जा के पक्ष को स्वीकार कर लूँगा।

पंडित जी ने उससे पत्र लिखना जारी रखा। तंग आकर मिर्जा ने लिखा की यहाँ कादियान आकर क्यों नहीं चमत्कार देख लेते। सोचा था की न पंडित जी का कादियान आना होगा और बला भी टल जाएगी पर पंडित जी अपनी धुन के पक्के थे। मिर्जा गुलाम अहमद की कोठी पर कादियान पहुँच गए। दो मास तक पंडित

राजा शुद्ध स्वदेशी तथा दण्डनीय हो ? (वेद तथा स्वामी द्यानन्द)

-मनोहर विद्यालंकार

प्रत्येक देश अपने राष्ट्रको दैवीय विपत्तियों तथा मानवीय क्षतियों से सुरक्षित करके राष्ट्र संघ में प्रमुख स्थान प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। अपने देश में नैतिकता के स्तर को उन्नत करने के लिए संघम, सदाचार और कर्तव्य पालन की शिक्षा देकर, राष्ट्र को ऐश्वर्य सम्पन्न तथा प्रत्येक नागरिक की कल्याण कामना तथा शासन में भागीदारी को ध्यान में रखते हुए, जनतन्त्रात्मक शासन के रूप में फुलता फलता देखने की कामना करता है।

किन्तु जनतन्त्रात्मक शासन में प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों को महत्वपूर्ण मानकर उनका प्रसार करता है। परिणामतः राष्ट्र में पृथक-पृथक विचारधारा के अनेक गुट बन जाते हैं। उसके बाद प्रत्येक गुट अपनी विचारधारा को कार्यरूप में परिणत करने के लिए अपने दल के संगठन को दृढ़ और लोकप्रिय बनाने के लिए जी जान से परिश्रम करता है। इस प्रकार जो अनेक दल निर्मित होते हैं, वे अपने दल की उन्नति को सर्वोपरि मान लेते हैं। उनके लिए देश की उन्नति गौण और उपोक्षित हो जाती है।

इसलिए देश की एकात्मता को कायम रखने के लिए, देश की प्रतिनिधि संस्थाओं के प्रमुख प्रतिनिधि संस्थाओं के प्रमुख प्रतिनिधि मिलकर कुछ नियम निर्धारित करते हैं, जिन्हें मानना सबके लिए अनिवार्य होता है।

इस दृष्टि से राष्ट्र में राजप्रमुख बनाने के लिए किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है-उनकी चर्चा करने वाला वेद मन्त्र क्या कहता है, वह देखते हैं। मन्त्र निम्न है-इदं देवा असपलं सुवध्वं महतेक्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय, महते आनाराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इममवृष्ट्य

पुत्रममुष्ये पुत्रं अस्यै विश एष्वोऽमी राजा सोमोऽराकं ब्राह्मणानां राजा ॥ ऋषिः देववातः । देवता यजमानः । छन्दः ब्राह्मीत्रिष्टुप । -यजुः १०-१८

मन्त्र का शब्दार्थ करने से पूर्व कुछ शब्दों को समझना जरूरी है। यह मन्त्र 'देवाः' को सम्बोधन करता है। ये देव कोई विसिष्ट शक्ति सम्पन्न व्यक्ति अथवा विजातीय लोग नहीं हैं, अपितु राष्ट्र का प्रत्येक मतदाता देव है, उसे राष्ट्र की चरमोन्नति को दृष्टि में रखकर अपना मत देना है। राष्ट्र को यदि वाह्य और आन्तर दोनों दृष्टियों से शत्रुविहीन बनाना है, तो राष्ट्र प्रमुख का निर्वाचन विर्विरोध करना चाहिए। (असपलम्) ।

राष्ट्र के प्रमुख राजा, तथा तत्सम प्रमुख पदों पर अधिष्ठित होने वाले व्यक्ति के माता और पित दोनों इस राष्ट्र की प्रजा (देशोत्पन्न व्यक्ति समूह) का अंग होने चाहिए।

४) मन्त्र में आए 'ब्राह्मणानां राजा' का अर्थ उच्चतम न्यायालय के सदस्य तथा उनका प्रमुख सोम अर्थात् शान्ति और खुशी के स्वामी परमात्मा का प्रतिनिधि रूप राजा है। ये शासन के पदाधिकारियों के ऊपर है। वेद की दृष्टि में राज्य पालिका से न्याय पालिका कुछ अंशों में उच्च है। निर्वाचित लोक सभा भी उच्चतम न्यायालय के निर्णय को नहीं बदल सकती।

अर्थ-(देवाः) राष्ट्र को दिव्य बनाने की कामना वाले मतदाता नागरिकों ! (इदं आसपलं सुवध्वम्) इस राष्ट्र को वाह्य और आध्यत्तर शत्रुओं से विहीन बनाओ, ताकि हमारा राष्ट्र (महतेक्षत्राय) महान छात्र धर्मके विस्तार अर्थात् प्रजा की दैवीय तथा मानवीय क्षतियों से रक्षा अथवा पूर्ति करने में समर्थ हो,

(महतेज्येष्ठ्याय) राष्ट्र समूह में महत्वपूर्ण इन्पन को प्राप्त करने में समर्थ हो (महते जानराज्याय) अपने राष्ट्र को महान् जनतन्त्र बनाने में समर्थ हो (इन्द्रस्य इन्द्रियाय) ऐश्वर्यशाली व्यक्ति की संयत शक्ति को प्राप्त करने में समर्थ हो। इसके लिए आवश्यक है कि (इमम्) ऐसे व्यक्ति को राजा (प्रमुख बनाओ, जो व्यक्ति (अस्यै विशः) इस देश की प्रजा के (अमुष्य पुत्रम्) अमुक माता का पुत्र हो, (अभी) हे प्रजाओं ! (एप वः राजा) यह आपका राजा=नियन्ता है। किन्तु (अस्माकं ब्राह्मणानां) हम जैसे आसक्तिरहित ब्रह्मिर्यों का राजा तो (सोमः) आनन्द और शान्ति का प्रदाता परमात्मा ही है।

निष्कर्ष :

१) इस मन्त्र में राष्ट्र की आन्तर और वाह्य आक्रमण या प्रहार से रक्षा के निमित्त, स्वराष्ट्र को राष्ट्रसंघ में प्रमुखता प्राप्त करने के निमित्त, जनतान्त्रिक राज्य व्यवस्था को आदर्श बनाने के निमित्त तथा स्वराष्ट्र को आर्थिक दृष्टि से संयत दृष्टि को अपनाकर ऐश्वर्यशाली नाकर अजात शत्रु बनाने के लिए कुछ उपाय सुझाए गए हैं।

क) जहां तक सम्भव हो राजा का निर्वाचन निर्विरोध किया जाए।

ख) राजा जो चुना जाए उसके माता व पिता राष्ट्र में जन्मी हुई प्रजा में से होने चाहिए।

ग) राजा को वैदिक संस्कृति में यद्यपि परमात्मा का प्रतिनिधि रूप होने से सर्वोपरि माना गया है। फिर भी ब्राह्मणों ब्रह्मिर्यों को उससे उच्च स्थान प्राप्त हैं। वसिष्ठ और व्यास जैसे महर्षियों के निर्देश उनके लिए आदेश माने गए हैं।

२) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तीन

पालिकाएं (संविधान, कार्य, न्याय बन गई हैं। इसलिए संविधान पालिका का अध्यक्ष=संसद, का सभापति, न्यायपालिका का अध्यक्ष=सर्वोच्च न्यायालय का प्रमुख, तथा कार्यपालिका (सेनाआरक्ष) के प्रमुख राष्ट्रपति को भी राजा समझना चाहिए। और इन चारों की नियुक्ति या निर्वाचन में क और ख दोनों धाराएं लागू होगी।

३) इन चारों की समिति के बहुमत को सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को भी परिवर्तित करने का अधिकार दिया जाना चाहिए। केवल संसद और राज्य सभा मिलकर भी सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को बदलने में सक्षण नहीं हो सकते।

४) राष्ट्रपति, संसद सभापति, उपराष्ट्रपति और सर्वोच्च न्यायमूर्ति की समिति ब्रह्मर्थि सभा कहलाएंगी। यह समिति सार्वकालिक नहीं होगी। आपातकाल में एक मास के नोटिस पर इसे बुलाया जा सकेगा और इसे एक सप्ताह में निर्णय दे देना होगा।

क) प्रथम निष्कर्ष का कारण है कि विदेशी पिता या विदेशी माता की सन्तान राष्ट्र के लिए सम्पूर्ण रूप में समर्पित नहीं हो सकती।

ख) तृतीय निष्कर्ष का कारण है कि सर्वाधिकार सम्पन्न स्वतन्त्र संस्थाएं परस्पर न झगड़ने लगें।

ग) सामान्यतया सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय अनुलंघनीय और सर्वमान्य होगा। स्वामी दयानन्द की राजा के सम्बन्ध में विशिष्ट उकियां।

९) स्वामी दयानन्द ने अपने यजुर्वेद भाष्य के नवम अध्ययाय के मन्त्र संख्या ४८ के भावार्थ में सभाध्यक्ष राजा के लिए जो गुण लिखे उन्हें पूराकरने वाला व्यक्ति मिलना तो इस युग में असम्भव प्रतीत होता है। इसलिए हमें उसके पिता माता को राष्ट्र में प्रसूत होना अनिवार्य करना ही चाहिए।

हे राजप्रजांजना! यो विद्वद्भ्यां मातापितृभ्यां सुशिक्षितः कुलीनी महागुण

कर्मस्वभावो जितेन्द्रियत्वा दिगुणयुक्तः सविताऽष्टाचत्वारिंशद् वर्ष ब्रह्मचर्य विधा सुशिक्षः पूर्णशिरीरात्मबलः प्रजापालनप्रियो विद्वान् अस्ति सं सभाध्यक्षंराजानं कृत्वा साप्रद्वजायं सेवध्यम्।

हे राजशासन और प्रजा के मनुष्यों! तुम ऐसे व्यक्ति को जो विद्वान् माता पिता के द्वारा सुशिक्षित, कुलीन, उत्तम गुण कर्म स्वभाव युक्त, जितेन्द्रियादि गुण सम्पन्न, ४८ वर्ष गर्वन्त ब्रह्मचर्य पूर्वक विद्या प्राप्त करके सुशील, शरीर और आत्मा के बल से युक्त, स्वभाव से प्रजापालन प्रिय तथा विद्वान् हो सर्वोपरिसभा का अध्यक्ष राजा बनाकर साम्राज्य का सेवन करो।

२) स्वामी दयानन्द राजा को भी उदण्डनीय नहीं मानते। वे यजुः ८-२३ के भावार्थ में लिखते हैं-कथंचिद् यदि राजा दुष्कर्मकृत्यात्तिर्ह प्रजा यथापराधं राजानं दण्डयेत् राजा च प्रजापुरुपम्, कदाप्यपराधिनं दण्डेन विना न त्यजेत्। अर्थ :- यदि राजा भी दुष्कर्म करे तो प्रजा राजा को अपराध के अनुसार दण्ड देवे, और राजा प्रजा के पुरुषों को, अपराधी को दण्ड दिए विना कभी न छोड़ें।

अर्थ-पोषण असपल्म्-असपल्म्-निर्विरोध तथा शत्रविहीन, देवाः दिवु क्रीडा- विजिगोषाव्यवहारधृति स्तुतमादमदस्वप्न कान्तिगतिषु । सुवध्वम्-वृ प्रेरणे-प्रयन्त करो, सु प्रसवैश्वर्योः-ऐश्वर्य सम्पन्न बनाओ, क्षत्राय-क्षतात्किल त्रायत इत्युदग्रः क्षत्रस्यशब्दो भुवनेषुरुढः। कालिदास महते-महपूजायाम्- पूजनीय, ज्येष्ठवाय-प्रमुखपद प्राप्तये, जनराज्याय-जनानां राज्यं शासनं जन राज्यम्- नेभ्याहिताय रेव शासितं राज्यं-स्वार्थं ५४- जानराज्यम्। इन्द्रः-जितेन्द्रियत्वात् शत्रून् पराजित्य ऐश्वर्यशाली। इन्द्रयाय-इन्द्रस्य-सामर्थ्यं प्राप्तये। सोमः शान्त स्वरूपः आनन्दमयः आनन्द प्रदश्च।

ब्रह्मणा: ब्रह्म ईश्वरो वेदस्तत्वं तपोवा, तदधीतेत द्वेद करोति च।

जी कादियान में रहे पर मिर्जा गुलाम अहमद कोई भी चमत्कार नहीं दिखा सका।

इस खीज से आर्य समाज और पंडित लेखराम को अपना कट्टर दुश्मन मानकर मिर्जा ने आर्य समाज के विरुद्ध दुप्रचार आरम्भ कर दिया। मिर्जा ने द्वाहिने अहमदिया लिखकर दिया। मिर्जा ने सुरमाए चश्मे आर्या (आर्यों की आंख का सुरमा) लिखा जिसका पंडित जी ने उत्तर नुस्खाए खबते अहमदिया (अहमदी खब्त का इलाज) लिख कर दिया। मिर्जा ने सुरमाए चश्मे आर्या में यह भविष्यवाणी करी की एक वर्ष के भीतर पंडित जी की मौत हो जाएगी। मिर्जा की यह भविष्यवाणी गलत निकली और पंडित इस बात के ११ वर्ष बाद तक जीवित रहे।

पंडित जी की तपस्या से लाखों हिन्दू युवक मुसलमान होने से बच गए। उनका हिन्दू जाति पर सदा उपकार रहेगा।

पंडित जी का अमर बलिदान मार्च १८९७ में एक व्यक्ति पंडित लेखराम के पास आया। उसका कहना था की वो पहले हिन्दू था वाद में मुसलमान हो गया। अब फिर से शुद्ध होकर हिन्दू बनना चाहता है। वह पंडित जी के घर में ही रहने लगा और वही भोजन करने लगा। ६ मार्च १८९७ को पंडित जी घर में स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र पर कार्य कर रहे थे। तभी उन्होंने एक अंगराई ली की उस दुष्ट ने पंडित जी को छुरा मार दिया और भाग गया। पंडित जी को अस्ताल लेकर जाया गया जहाँ रात को दो बजे उन्होंने प्राण त्याग दिए। पंडित जी को अपने प्राणों की चिन्ता नहीं थी उन्हें चिन्ता थी तो वैदिक धर्म की थी। उनका आखिरी सन्देश भी यही थे कि “तहरीर (लेखन) और तकरीर (शास्त्रार्थ) का काम बन्द नहीं होना चाहिए।” पंडित जी का जीवन आज के हिन्दू युवकों के लिए प्रेरणा दायक है कि कभी विर्धमियों से डरे नहीं और जो निश्त है उनका सदा साथ देवे।

प्राकृतिक खेती के माध्यम से ही किसान बन सकता है अपना भाग्य विधाता

-प्रदीप दलाल

अस्पतालों में लगती लम्बी लाइनें, प्रतिदिन नए नाम से जन्म लेती नई-नई बीमारियां, लोगों में घटती रोग प्रतिरोधन क्षमता। यह सब यूं ही नहीं है बल्कि यह सब परिणाम है रासायनिक खेती के माध्यम से अधिक फसल लेने के लालच में उस धरती माता को हमने जहरीले कीटनाशक और उर्वरक डाल-जाल कर बंजर बना दिया। जिस धरती मां ने हमें सब कुछ दिया। इन जहरीले उर्वरकों और कीटनाशकों से तैयार हुई फसलें भला अच्छा स्वास्थ्य कैसे प्रदान कर सकती हैं। भला जहरीले कीटनाशकों और उर्वरकों के माध्यम से उगाई गई फसल से अच्छे स्वास्थ्य की उम्मीद कैसे की जा सकती है। माना अच्छेरा धना है लेकिन दीप जलाना कहां मना है। इन्हीं चन्द लाइनों को चरितार्थ कर प्राकृतिक कृषि को जन-जन तक पहुंचाने के कार्य का जिम्मा पिछले लगभग एक दशक के करीब से राज्यपाल आचार्य देवब्रत ने अपने कन्धों पर लिया है और उसके सुखद परिणाम अब सामने आने लगे हैं। अब किसान उनके जागरूकता अभियानों के माध्यम से जागरूक हो रासायनिक खेती को त्याग कर प्राकृतिक खेती को अपनाने लगे हैं और प्राकृतिक खेती के माध्यम से वे अच्छा मुनाफा भी कमा रहे हैं, क्योंकि वर्तमान में प्राकृतिक खेती के उत्पादों की मांग लगातार बढ़ती जा रही है और लोग उनके लिए दोगुने और ३ गुने दाम देने के लिए भी तैयार हैं, क्योंकि अपने स्वास्थ्य के साथ कोई समझौता नहीं करना चाहता। यह इतना आसान नहीं था, क्योंकि पहले पहल कोई भी प्राकृतिक खेती के परिणामों पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था, लेकिन जब प्राकृतिक खेती पर शोध हुए तो तब जाकर प्राकृतिक खेती की महत्ता को सबने न केवल समझा बल्कि इसे वर्तमान समय की जरूरत भी करार दिया। आज राज्यपाल आचार्य देवब्रत गुजरात राज्यपाल के पद पर होते हुए न केवल गुजरात में बल्कि पूरे देश भर में किसानों की सभाएं

कर लगातार किसानों को प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए जागरूक कर रहे हैं। जब वे प्राकृतिक खेती सभाओं में लोगों को जागरूक करते हैं तो वे अध्यापक की भूमिका में नजर आते हैं और लोगों को उदाहरण सहित पूरी प्रक्रिया समझाते हैं।

राज्यपाल आचार्य देवब्रत के मार्गदर्शन में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के १८० एकड़ में पिछले कई वर्षों से प्राकृतिक खेती की जा रही है, जिसे देखने देश ही नहीं बल्कि विदेशों से भी कृषि वैज्ञानिक व किसान पहुंचते हैं। गुरुकुल कुरुक्षेत्र में ही देशभर से आने वाले किसानों के लिए प्राकृतिक कृषि ट्रेनिंग की भी पूरी व्यवस्थाकी गई है। जिसके माध्यम से किसान ट्रेनिंग कर प्राकृतिक खेती को पहले कम क्षेत्र में कर उससे मुनाफा मिलने पर अधिक क्षेत्र में कर सकता है। डॉ. हरिओम (राष्ट्रीय कृषि अवॉर्डी) किसानों को प्रशिक्षित करने का कार्य कर रहे हैं। राज्यपाल आचार्य देवब्रत बताते हैं कि शुरुआत में उनके लिए भी विश्वास करना मुश्किल रहा, लेकिन जब इसके सुखद परिणाम देखे तो उन्होंने इसके लिए देशभर में जागरूकता की अलख लगाने का विचार किया और आज भारत सरकार और कई राज्यों की सरकारें किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रोत्साहित करने का कार्य कर रही हैं। वित्तमन्त्री निर्मला सीतारमण ने ऐलान किया है कि प्राकृतिक खेती करने के लिए अगले तीन साल तक ९ करोड़ किसानों की मदद की जाएगी। श्रीलंका, नेपाल व अन्य देशों से कृषि वैज्ञानिक गुरुकुल कुरुक्षेत्र का प्राकृतिक खेती मॉडल देखकर और उससे प्रभावित होकर प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की इच्छा जata चुके हैं। राज्यपाल आचार्य देवब्रत कहते हैं कि प्राकृतिक खेती मात्र कृषि नहीं बल्कि जीवन पद्धति है जो कि पुरातन समय में लोग लम्बे समय से करते आ रहे थे। जंगल में पेड़ पौधों में जहरीले कीटनाशक या उर्वरक कोई नहीं छिड़कता, लेकिन बावजूद इसके वे पेड़ न केवल हरे भरे खड़े रहते हैं, बल्कि लम्बे

समय तक जीवित भी रहते हैं। राज्यपाल आचार्य देवब्रत द्वारा चलाई गई अभियानों से लाखों किसान प्रभावित होकर प्राकृतिक कृषि अपना चुके हैं। प्राकृतिक कृषि से जहां भूमि बन्जर होने से बचेगी वहीं वायु और जल प्रदूषण भी नहीं होगा। प्राकृतिक खेती पूर्ण रूप से गी आधारित कृषि है और इससे जहां गोरक्षा होगी वही गोसंवर्धन भी होगा और गोमाता के चमत्कारी गुणों से हर व्यक्ति गोमाता की महिमा को जान सकेगा कि आखिर गाय को हमारे धर्मग्रन्थों और संस्कृति में आखिर माता का दर्जा क्यों दिया गया। प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखती है। प्राकृतिक खेती में रासायनिक उर्वरकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग नहीं होता है, बल्कि प्रकृति में आसानी से उपलब्ध होने वाले प्राकृतिक तत्त्वों तथा जीवाणुओं के उपयोग से खेती की जाती है।

यह पद्धति पर्यावरण के अनुकूल है तथा फसलों की लागत कम करने में कारगर है। प्राकृतिक खेती में जीवामृत (जीव अमृत), धन जीवामृत एवं बीजामृत का उपयोग पौधों को पोषक तत्त्व प्रदान करने के लिए किया जाता है। इनका उपयोग फसलों पर धोल के छिड़काव अथवा सिंचाई के पानी के साथ में किया जाता है। प्राकृतिक खेती में कीटनाशकों के रूप में नीमास्त्र, ब्रह्मास्त्र, अग्निअस्त्र, सोठास्त्र, दषा पड़नी, नीम पेस्ट, गोमूत्र का इस्तेमाल किया जाता है। निसन्देह प्राकृतिक खेती वर्तमान समय की सबसे बड़ी जरूरत है, क्योंकि स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन का निवास होता है किन्तु जब स्वस्थ तन ही नहीं रहेगा व्यक्ति कैसे आखिर समाज और देश को आगे बढ़ाने में सक्षम होगा। निश्चित रूप से राज्यपाल आचार्य देवब्रत की पहल पूरे देशभर में एक क्रान्ति के रूप में किसानों को जागरूक करने का कार्य कर रही है और भविष्य में इसके बेहद सुखद परिणाम होंगे, जो ने केवल किसानों की आय को बढ़ाने का कार्य करेंगे बल्कि इससे देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी और किसान अपना भाग्य विधाता स्वयं बन सकेगा।

पान्च मूर्तिमान देव पूजनीय हैं

-डॉ. विजेन्द्र पाल सिंह

वेद में पाषण पूजा अर्थात् मूर्ति पूजा का निपेध है न तस्य प्रतिमाऽस्ति - यजुर्वेद अ.३२. भ. अर्थात् जो सब जगत् में व्यापक है उस निराकार परमात्मा की प्रतिमा परिमाण साद्रश्य वा मूर्ति नहीं है।

सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने पञ्चायतन पूजा का वर्णन किया है वह मूर्तिमान पान्च अर्थात् माता-पिता आचार्य अतिथि और स्त्री के लिए उसका पति तथा पुरुष के लिए उसकी अपनी पत्नी। यही वेदोक्त पञ्चायतन अर्थात् देव पूजा है।

मा नो वधी पितरं मोत मातरम्-
यजुर्वेद, प्रथम माता मूर्तिमती पूजनीय देवता अर्थात् सन्तानों को तन मन धन से सेवा करके माता को प्रसन्न रखना, हिंसा अर्थात् ताड़ना कभी न करना। माता ही प्रथम मूर्तिमती पूजनीय देवता है माता को जैसे वह प्रसन्न रहे रखना उसके लिए अनुकूल भोजन वस्त्र आदि से सन्तुष्ट रखना माता की सेवा है यह मूर्तिमान जीवित मूर्ति है इसी माता ने हमें जन्म दिया इससे हम इन जगत् में आए सगे सम्बन्धी मिले सन्सार का निर्माण करने वाला जो परमेश्वर है सबका पिता है उसे जानने समझने का अवसर प्राप्त हुआ, माता जन्म न दे तो इस चारों ओर के वातावरण को कैसे देख पाते कैसे जान पाते इस जगत् का रचयिता एक ईश्वर है। विडम्बना यह है कि अज्ञानी जन जीवित अपनी जो मूर्तिमान माता है देवी है, उसे छोड़ कर पाषण की मूर्तियों पर खीर पूरी नैवेद्य चढ़ाते हैं पाषण की वह काल्पनिक बनाई जड़वत् मूर्ति तो नहीं खाती अपितु उस नैवेद्य को चूंहे कुते आदि ही खा जाते व चाटते रहते हैं। अज्ञानी अपनी विवेक बुद्धि से नहीं सोचता कि यह पत्थर की बनाई मूर्ति है इसके हाड़ मांस आन्त व दान्त नहीं जो बोलती चलती फिरती नहीं जिसमें आत्मा नहीं जो अचेतन व जड़वत है

कैसे खा सकती है उस कुम्हार के हाथ की बनाई मूर्ति को भोजन खिलाने से कुछ नहीं होगा वह खाती तो नहीं जो खाद्य पदार्थ चढ़ाया जाता है उसके मुँह पर या आकार पर ही ज्यूं का त्यूं रखा रह जाता है। घर में जो मां बैठी है जीवित मूर्ति है उसे उसकी इच्छानुसार खिलाओ वह भोजन व पानी मांगती भी है व खाती पीती भी है बोलेगी भी आपको आशीर्वाद भी देगी उसकी सेवा करोगे तो वह प्रसन्न भी रहेगी यही तो देवी है यही पूजा के योग्य है पूजनीय देव है उसकी पूजा ही श्रेष्ठ है। पाषण की मूर्तियों की पूजा करना अन्ध विश्वास है।

एक अन्ध विश्वास समाज में बहुत चल पड़ा है लोग देवी जागरण करते हैं देवी जागरण करने वाले मुँह मांगा मूल्य देकर आते व मध्य, मादक द्रव्य मांग आदि का सेवन तक करते व रातभर फिल्मी गानों की धून कर शृंगार रस के उल्टे सीधे गीत गाकर शोर करते न सोते न किसी को सोने देते काल्पनिक देवियाँ के पुतले बना कर पूजते उनकी आरती करते व कराते इससे समाज में अज्ञानता रुपी पाखण्ड की वृद्धि होती है। इसका कोई औचित्य नहीं कोई आत्मिक उन्नति भी नहीं और यह मात्र पाखण्ड है इससे तो अच्छा हो गार्गी, कैकेयी, रानी दुर्गावती कर्मविती पद्मावती राजकुमारी कार्विका आदि वीर नारियाँ की वीरता पूर्ण ऐतिहासिक साहस पूर्ण गाथा को सुनाते तो समाज में जागृति तो आती। असली मां को छोड़ नकली व काल्पनिक मां पाषण की पूजा में समय नष्ट करते हैं।

हमारे देश में अनेक महान योद्धा वीर नारियां हुयीं जिनमें शत्रु को पराजित करने की पूरी शक्ति थी ऐसी थी राजकुमारी कार्विका पंजाब प्रदेश के कठ गणराज्य की वीर नारी थी जिसने सिकन्दर की मैदान छोड़ कर भाग जाने पर मजबूर किया था उनके चरित्र को सुनना सुनाना

चाहिए। दूसरा देव बताया है पिता जिसकी माता के समान ही सेवा करनी चाहिए। पिता को उसकी आवश्यकतानुसार भोजन वस्त्र आदि से सेवा कर सन्तुष्ट रखना चाहिए। यह पञ्चायतन पूजा का दूसरा देव है सदैव माता व पिता को प्रसन्न रखना कभी उनसे कटुवचन न कहना कभी उनका दिल नहीं दुखाना चाहिए। यही तो है जिन्होंने पुत्र व पुत्री को जन्म देकर अपने हृदय से लगा कर रखा कभी अपने बालक को कोई कष्ट नहीं होने दिया सदैव अच्छा भोजन दूध व वस्त्र और अपने स्नेह से सन्तुष्ट रखा आज यदि सन्तान बड़ी हो गई तो क्या उनके अपने स्नेह से सन्तुष्ट रखा आज यदि सन्तान बड़ी हो गई तो क्या उनके उस स्नेह को ठोकर मारना उचित है? आज विडम्बना यह है कि वृद्ध माता-पिता वृद्धाश्रमों में शरण ले रहे हैं। घर में भी हैं तो सन्तानें माता-पिता को दुःखी रखती हैं और उनका उद्देश्य माता-पिता की सेवा करना कम और अपनी स्वयं की सेवा करना अधिक होता है। माता-पिता से ऐसी सन्तानें चाहती हैं कि वह उन्हें जो धन मकान आदि है सब उन्हें दे दें आज मानव भौतिकवाद में फंस गया है। संस्कारों का महत्व माता-पिता के साथ कर्तव्य का निर्वाह करने में बहुत पीछे चला गया है। पाश्चात्य संस्कारों के प्रवाह ने भारतीय संस्कृति में विषय घोल दिया है। आज इसका कारण वैदिक ज्ञान से बढ़ती हुई दूरियां हैं।

तीसरा देव आचार्य है आचार्यऽउपनय मानो ब्रह्मचारिणमिच्छते। आचार्य जो विद्या का देने वाला है उसकी तन, मन, धन से सेवा करना।

सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय समुल्लास में शतपथ के वचन का प्रकाश किया है 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद'। अर्थात् प्रथम माता दूसरा पिता और तीसरा आचार्य यह तीन उत्तम

शिक्षक हों वह सन्तान बड़ा भाग्यवान होता है। माता-पिता की भांति आचार्य की सेवा करना देव पूजा है आचार्य विद्या को देने वाला है पढ़ाने वाला है।

वेदमनुच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशस्ति सत्यंवद् । धर्मं चर । स्वाध्यायान्माप्रमदः । आचार्याय प्रियं धनमाहत्य प्रजातन्तुं मा व्यवहेसीः सत्यान्न न प्रमदितव्यम् ।

-तैत्तिरीयोपनिषद

आचार्य अन्तेवासी अर्थात् विषय और शिष्याओं को इस प्रकार उपदेश करे तूं सदा सत्य बोल, धर्माचार कर प्रमाद रहित होके पढ़ पढ़ा, पूर्ण ब्रह्मचर्य से समस्त विद्याओं को ग्रहण कर । -स.प्र. ततीय समु.

प्राचीन काल में गुरुकुल व आश्रम विद्या के केन्द्र थे । आचार्य शिष्य व शिष्याओं को शिक्षा देते थे यहाँ से गार्गी, मैत्रेयी, लोपा मुद्रा, धोष, विश्ववारा आदि विदुषी गुरुकुल की देन थी राम कृष्ण गुरुकुल में आचार्यों के सान्निध्य में ही महान बने अतः अचार्य वह देव है जो जीवन में अमृत भर दे आचार्य चाणक्य ने तीन चक्रवर्ती शासकों का निर्माण किया ता अतः आचार्य की सेवा तन, मन, धन से करनी चाहिए । आचार्य व्यक्ति व राष्ट्र का निर्माण होता है । महाराजा दशरथ के सुमन्त महाभारत के समय विदुर और चन्द्र गुप्त मौर्य के स्वर्णिम काल में राष्ट्र निर्माता आचार्य चाणक्य से विद्वान ही थे । ऐसे विद्वान आचार्यों की जितनी भी सेवा करें उतना ही सभी के लिए श्रेष्ठ कर होगा तथा उन्नति होती रहेगी ।

चोथा देव अतिथि को बताया है अतिथि गृहानुपगच्छेत् -अर्थव्.

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी लिखते हैं 'जो विद्वान, धार्मिक, निष्कपटी, सब की उन्नति चाहने वाला जगत् में भ्रमण करता हुआ सत्य उपदेश से सब को सुखी करता है उसकी सेवा करें ।

-स.प्र.एका.समु.

व्यक्ति परिवार व समाज के निर्माण में विद्वान ऋषि महर्षि वेदोपदेशकों का विशेष महत्व हैं इनकी सेवा तन-मन व

धन से करनी चाहिए इनसे जगत् में अज्ञान रूपी अन्धकार का निवारण होता है । आज समाज में मूर्ति अर्थात् पाषण पूजा, गुरुडमवाद, जादू-टोना, तान्त्रिक कर्म जैसे पाखण्ड न अन्ध विश्वास खेत में जैसे खरपतवार बढ़ जाती है उसी प्रकार से बढ़ रहे हैं यदि खेत में से खरपतवार को न निकाला जाए तो वह कृषि अर्थात् जो फसल अन्न आदि हम भूमि से ले रहे हैं उसे नष्ट कर देगी उसी प्रकार समाज में अन्ध विश्वास पाखण्ड बढ़कर समाज को नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं । अच्छे उपदेशक व विद्वान ही अतिथि देन हैं जो ज्ञानरूपी उपदेश से इस अन्धकार को दूर कर ज्ञान का प्रकाश करते हैं और समाज स्वच्छ अज्ञानता रहित होकर श्रेष्ठता धारण करता है न कहाँ भय होता न ईर्ष्या, द्वेष होता है । प्रजा निश्चिन्त हो सुखी रहती है । अतः इन अतिथियों को देव कहा है यही जीवित मूर्तियों हैं इनकी सेवा हर सम्भव करनी योग्य है । पाषण मूर्तियों की नहीं ।

पांचवा देव जो पूजनीय है-पितृभि भ्रातृ भिस्वैताः पतिभिदैवरैस्तथा पूज्या भूषणित-व्याश्च बहुकल्याणमीभुभिः ।

स्त्री के लिए पति और पुरुष के लिए उसकी पत्नी पूजनीय है । पूजा का अर्थ सत्कार व सम्मान है । स्त्री को पति का सम्मान व पुरुष को अपनी पत्नी का सम्मान करना चाहिए । श्रीकृष्ण व रूक्मिणी तथा मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम व सीता एक दूसरे का सम्मान करते थे । वेदों के ज्ञाता थे और उनकी सन्तानें भी योग्य व प्रतिभाशाली हुई तथा युद्धों में उन्हें विजय प्राप्त हुई पति-पत्नी आपस में प्रेम से रहें विद्वान हों । ज्ञान-वान हों वहाँ चहुँ और ज्ञान-धन व विजय श्री की प्राप्ति होती है । यह पांच देव पूजनीय हैं जो ईश्वर प्राप्ति की सीढ़ियाँ हैं व्यक्ति समाज राष्ट्र की उन्नति के सूत्रधार हैं जब घर में माता-पिता वृद्धजन सन्यासी विद्वान व अतिथि प्रसन्न रहते हैं वहाँ सुख शान्ति स्थापित रहती है यह पाषण पूजा से कदापि सम्भव नहीं ।

गणतन्त्र के पैरों में पड़ी अंग्रेजी की बेड़ियां तोड़ दो हर बात में अंग्रेजी का प्रयोग करना छोड़ दो

-महाबीर धीर शास्त्री

थोड़े से अंग्रेजों ने दुनिया पर राज किया । अपनी लंगड़ी भाषा जिसके अक्षर को दो पंक्ति के, कोई तीन चार के, कोई कहाँ कुछ बोलना, कहाँ कुछ, कहाँ कुछ बोलना ही नहीं ? ऐसी जंगली भाषा को भारत के लोग अपने सिर पर रखे हुए गौरव के साथ धूम रहे हैं और अपनी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ भाषा हिन्दी, संस्कृत को पैरों के नीचे रोंदते जा रहे हैं, की सोच नहीं है । पहले हम गुलाम नहीं थे, अंग्रेजों से लड़ाई थे हमने उनको मार भगा दिया था, लेकिन आज हम अंग्रेजों का भाषा, संस्कृति, त्यौहार, खान-पान और पहरान के पक्के गुलाम हैं । हम कई-कई हजार की टाई से अपने गले में फांसी लगा लेते हैं, लेकिन तीन सूत के तार से बना जीवन संकल्प का यज्ञोपवीत (जनेऊ) नहीं पहन सकते । सिर पर चोटी नहीं रख सकते । भले ही इनका लाभ आप नहीं समझते । लेकिन समझोगे तो महान् लाभ का पता लगेगा ।

हे महान् भारत के महान् सपूतो ! आज गणतन्त्र दिवस पर अपने तन्त्र को दृढ़ बनाने के लिए शपथ ले लो ।

9) अपनी भाषा को शुद्धता से सीखो और उसका प्रयोग सब स्थान पर करो । जहाँ अति आवश्यक हो वहाँ अंग्रेजी का प्रयोग धड़ल्ले से करो । अंग्रेजी हमारी नौकरानी है उससे आवश्यकतानुसार काम लो । उसे सिर पर मत चढ़ने दो । सिर पर अपनी माँ के समान मातृभाषा/राष्ट्रभाषा को बैठाओ । एक नौकरानी को नहीं, नौकरानी महारानी बन बैठी है ? इसे भारत के सिंहासन से नीचे गिरा दो ।

प्रार्थना

-श्री नरेन्द्र आहूजा

ईश्वर की स्तुति करने के उपरान्त व्यक्ति ईश्वर से विभिन्न प्रकार से प्रार्थना करता है। सामान्यतया लौकिक व्यवहार में जब भी किसी व्यक्ति विशेष से कुछ प्राप्त करने की इच्छा वा सहायता मांगने के लिए जाते हैं तो उसकी प्रशंसा करते हैं फिर हम अपनी माँग रखते हुए सहायता माँगते हैं। हम व्यक्ति विशेष से हीक्यों, ईश्वर से प्रार्थना करते समय भी अपने निजी स्वार्थों के लिए जाने क्या-क्या उचित अनुचित माँगने लगते हैं। लाटरी लगा दे धनश्याम, तोड़ दुश्मन की नली जय बजरंग बली। यानि प्रार्थना में हम क्या माँग रहे हैं इसका भी ध्यान नहीं रखते। हम खुद तो कुछ न करें, अकर्मण्य होकर बैठे रहें और धनश्याम हमारी लाटरी लगा दे। हम तो आतंकवादियों के डर से चारपाई के नीचे दुबक जाएं और कहें जय बजरंग बली तोड़ दुश्मन की नली। जैसे हमने स्तुति प्रार्थना करके ईश्वर को अपना सुरक्षा कर्मी तैनात कर लिया। कई बार तो इससे भी आगे हम सीधे सीधे विशुद्ध व्यापारी बन जाते हैं” हे भगवान मेरी लाटरी निकाल दो सवा मणी करूँगा।” प्रार्थना के नाम पर प्रभु से भी सौदेवाजी पर उतारू हो जाते हैं।

आखिर प्रार्थना किसे कहते हैं, कैसे करते हैं, प्रार्थना और याचना में क्या अन्तर है? इससे समझने के लिए हमें इन शब्दों के सही व्यापक अर्थों एवं परिभाषाओं को समझना होगा। देव दयानन्द ने “आर्योदीश्य रलमाला” में प्रार्थना को परिभाषित करते हुए लिखा है “अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कार्यों की सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामर्थ्यवान मनुष्य से सहायता लेने को ‘प्रार्थना’ कहते हैं।” प्रार्थना की इस परिभाषा के प्रकाश में इस सम्बन्ध में फैली बहुत सी भ्रान्तियाँ ठीक उसी प्रकार दूर हो जाती हैं जैसे सत्य के सूर्य के प्रकाश में अन्धविश्वासों का अँधेरा कितना भी घना हो, पल भर में छंट जाता है।

प्रार्थना की परिभाषा में देव दयानन्द सबसे पहले लिखते हैं अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त यानि कि किसी भी कार्य जिस के लिए हम सर्वशक्तिमान ईश्वर वा सामर्थ्यवान मनुष्य से सहायता माँग रहे हैं उसके लिए पहली अनिवार्य शर्त स्वयं का पूर्ण पुरुषार्थ अर्थात् अपने सामर्थ्य के उपरान्त ही हम सहायता माँगने के अधिकारी हैं। ‘इन्द्रस्य युज्यः सखा’ अर्थात् वह परमात्मा हम जीवात्माओं का सच्चा सखा है परन्तु साथ ही कहा कि ‘इन्द्रं इच्छरत सखा’ अर्थात् सर्वशक्तिमान इन्द्र-ईश्वर प्रयास परिश्रम करने वालों का सहायक सखा है। अर्थात् ईश्वर उन्हीं के सहायक होते हैं जो व्यक्ति परिश्रम प्रयास द्वारा अपनी सहायता स्वयं करते हैं। इसका सीधा अभिप्राय यह है कि हम यदि स्वयं अकर्मण्य होकर बैठे रहें और चाहें कि हम ईश्वर की पूजा कर रहे हैं, भजन गा रहे हैं तो ईश्वर हमारे कार्य करेंगे। ऐसे तो ईश्वर कदापि हमारी सहायता नहीं करते। कई बार लौकिक जीवन में यदि हमें ऐसा प्रतीत होता है तो इसका कारण हमारी अल्पज्ञता है क्योंकि फल पाने वाले व्यक्ति विशेष के पूर्व में किए कार्यों संस्कारों व परिश्रम से हम परिचित नहीं हैं। अपनी अल्पज्ञता अज्ञान का दोष हम ईश्वर को नहीं दे सकते। गीता का उपदेश देते समय भी योगेश्वर कृष्ण ने ‘कर्म योग’ सिद्धांत समझाते हुए “कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन” कहा था यानि कर्म करन हमारा अधिकार है। यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय का मन्त्र “कुन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः।” अर्थात् मनुष्य सौ वर्षों तक कर्म करते हुए जीने की इच्छा करे। इसका स्पष्ट अभिप्राय यही है कि अपने पूर्ण पुरुषार्थ अथवा सामर्थ्य के उपरान्त ही हम सहायता माँगने के अधिकारी होते हैं। बिना स्वयं प्रयास किए किसी कार्य की पूर्ति हेतु दूसरे से सहायता माँगना या इच्छा

करना गलत है। देव दयानन्द ‘स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश’ में भी प्रार्थना को परिभाषित करते हुए लिखते हैं “अपने सामर्थ्य के उपरान्त ईश्वर के सम्बन्ध से जो विज्ञान आदि प्राप्त होते हैं उनके लिए ईश्वर से सहायता माँगना प्रार्थना कहलाता है।” यहाँ भी अपने ‘सामर्थ्य’ अर्थात् स्वयं के परिश्रम वा पुरुषार्थ की बात सहायता माँगने से पहले आई है।

अब प्रश्न उठता है कि प्रार्थना किस प्रकार के कार्यों के लिए की जाती है। क्या अपने व्यक्तिगत स्वार्थों कामनाओं इच्छाओं की पूर्ति हेतु सहायता माँगना भी ‘प्रार्थना’ कहलाता है। इसका उत्तर भी देव दयानन्द द्वारा दी प्रार्थना की परिभाषा में ही निहित है “अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कार्यों की सिद्धि के लिए परमेश्वर वा किसी सामर्थ्यवान मनुष्य से सहायता लेने को प्रार्थना कहते हैं” यहाँ प्रार्थना केवल उत्तम कर्मों की सिद्धिके लिए ही सार्थक बताई गई है। परोपकार के सभी कार्य, सामाजिक सर्वहितकारी कार्य, निष्काम वा यज्ञीय कार्य उत्तम कार्यों की श्रेणी में आते हैं। इसीलिए देव दयानन्द ने संसार के उपकार को आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य बताया है तथा अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझने की बात आर्य समाज के नियमों में लिखी है। अर्थात् बिना किसी फलकी इच्छा कामना के परोपकार की भावना से किए जाने वाले कार्य ही उत्तम कर्मों की श्रेणी में आते हैं। सामान्यतया लोग प्रार्थना एवं याचना को समानार्थक समझते हैं जबकि दोनों में बहुत अन्तर है। यदि हम व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि अपने हित के लिए सहायता माँगते हैं तो वह याचना की श्रेणी में आती है। जबकि पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त परोपकार वा उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए ईश्वर से सहायता माँगना या लेना प्रार्थना कहलाता है। इसलिए हम प्रार्थना के सही अर्थ को समझकर ही ईश्वर से प्रार्थना किया करें।

इन्सान नहीं उसका मन झगड़ा करता है

जैसे एक पतिव्रता पली इस बात का ध्यान रखकर कर्म करती है कि मेरे पति मुझ पर प्रसन्न रहें, और डरती रहती है कि उससे कोई ऐसा काम न हो जाए कि पति नागरज हो जाए। इसी प्रकार प्रत्येक राष्ट्र भक्त का धर्म है कि वह ध्यान रके कि कौन-सा कर्म करूँ जिससे मेरे राष्ट्र देवता, भगवान प्रसन्न हों और ऐसा कर्म न करूँ, जिससे प्रभु के कोप दृष्टि का भाजन बनना पड़े। इन बातों को ध्यान रखकर व्यक्ति जीवन निर्वहन करे, तो वह अपने राष्ट्रदेव के लिए कर्मशील कहा जाता है। हम जीवन-निर्वाह के लिए अपनी दुकान, मकान, अपने ऑफिस या पैकट्री में काम करते हैं, जो हमारी कर्मभूमि है। कर्म प्रारंभ करने से पहले राष्ट्र का चंदन करके मन में यह विचारना आवश्यक है कि हम राष्ट्र निर्माण के लिये यह कार्य कर रहे हैं।

कमाने का ढंग बदलें

इस प्रकार कर्म करते हुए व्यक्ति को यह एहसास रहेगा कि कहीं वह पैसा, धन या मान के लिए किसी को सताकर, परेशान करके तो नहीं कमा रहा है, क्योंकि उसका लक्ष्य राष्ट्र सेवा है।

तिरुवल्लुवर कहते हैं कि इन्सान अपनी पूजा-पाठ में भले ही कमी कर दे, पर दूसरों की सेवा व अपनी श्रमशीलता भरी ईमानदारी में कमी न रखे, तो हर मुसीबत में भगवान उसके सहायक होते हैं। वे कहते थे कि भोजन करने वैठो, तो अपनी रोटी को तोड़ने से पहले एक बार ध्यान से देखो कि इसे कैसे कमाया है। इसमें किसी बुगुनाह का खून तो नहीं है। किसी के बच्चों के आँसू, तो इसमें नहीं हैं। मैंने जो रोजी-रोटी कमायी है, उसमें कहीं पाप तो नहीं भरा है। छल-कपट तो नहीं है। अगर रोटी में पाप भरा हुआ है, तो वह रोटी हमें कभी चैन नहीं लेने देगी। उस पाप भरी कमाई से हमारा शरीर और अन्तःकरण मलिन होगा। वह भोजन खाने के बाद हमें भूख से मुक्ति तो मिल जायेगी, लेकिन जीवन में संतुष्टि नहीं रहेगी। जबकि पवित्रता, ईमानदारी की कमाई से हमारे चरित्र में

प्रखरता आयेगी। हमारा प्रखर चरित्र प्रखर राष्ट्र का निर्माण करेगा। तिरुवल्लुवर कहते हैं कि इन्सान भोजन करते समय गौर से अपनी उस रोटी को देखना शुरू कर दे, तो उसके कमाने का ढंग अगले दिन से निश्चित बदल जाएगा। साथ ही हम अपने कार्यशाला में जाते हैं, तो उस समय अपने प्रभु का ध्यान करें कि मुझसे कोई गुनाह न हो, मेरी कर्मा पवित्र रहे।

यह एहसास रहेगा कि कहीं वह पैसा, धन या मान के लिए किसी को सताकर, परेशान करके तो नहीं कमा रहा है, क्योंकि उसका लक्ष्य राष्ट्र सेवा है।

अगर हम संसार में स्वार्थ मय व्यवहार करते हैं हर समय अपने 'मैं' का ध्यान करते हैं, अहंकार का प्रदर्शन करते हैं, अपनी 'ईगो' पावर को साथ लेकर चलते हैं, तो हर जगह झगड़ा होगा, हर जगह कलह, क्लेश होगा। इसलिए भगवान कहते हैं, जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मेरी सृति को मानस पटल से उतरने नहीं देता, हर घड़ी मेरा ध्यान करता है, वह राष्ट्र का ही ध्यान है और राष्ट्र के लिए ही है।

तिरुवल्लुवर कहते हैं कि इन्सान अपनी पूजा-पाठ में भले ही कमी कर दे, पर दूसरों की सेवा व अपनी श्रमशीलता भरी ईमानदारी में कमी न रखे, तो हर मुसीबत में भगवान उसके सहायक होते हैं। वे कहते थे कि भोजन करने वैठो, तो अपनी रोटी को तोड़ने से पहले एक बार ध्यान से देखो कि इसे कैसे कमाया है। इसमें किसी बेगुनाह का खून तो नहीं है। किसी के बच्चों के आँसू तो इसमें नहीं हैं। मैंने जो रोजी-रोटी कमायी है, उसमें कहीं पाप तो नहीं भरा है। छल-कपट तो नहीं है। अगर रोटी में पाप भरा हुआ है, तो वह रोटी हमें कभी चैन नहीं लेने देगी। उस पाप भरी कमाई से हमारा शरीर और अन्तःकरण मलिन होगा। वह भोजन खाने के बाद हमें भूख से मुक्ति तो मिल जायेगी, लेकिन जीवन में संतुष्टि नहीं रहेगी। जबकि पवित्रता,

-सुधांशु जी महाराज ईमानदारी की कमाई से हमारे चरित्र में प्रखरता आयेगी। हमारा प्रखर चरित्र प्रखर राष्ट्र का निर्माण करेगा। तिरुवल्लुवर कहते हैं कि इन्सान बोजन करते समय गौर से अपनी उस रोटी को देखना शुरू कर दे, तो उसके कमाने का ढंग अगले दिन से निश्चित बदल जाएगा। साथ ही हम अपने कार्यशाला में जाते हैं, तो उस समय अपने प्रभु का ध्यान करें कि मुझसे कोई गुनाह न हो, मेरी कर्मा पवित्र रहे।

जीवन व्यवहार का ढंग बदलें

उपनिषदों में हमारे महान पुरुष वार-वार दृष्टि बदलने की बात कहते हैं, ताकि जीवन का ढंग इतना अच्छा बन जाय कि हम जहाँ भी बैठें वहाँ स्वर्ग बनने लगे। यहाँ से राष्ट्र निर्माण प्रारंभ होता है। कई लोग जहाँ भी जाते हैं, लड़ाई-झगड़ा, कलह-क्लेश को अपने अंदर बसा कर रखते हैं, और उन्हीं लोगों के मुख से यह भी निकलता है कि हम जहाँ भी जाते हैं, पता नहीं क्यों लड़ाई-झगड़ा हो जाता है ?

वास्तव में लोग झगड़ा नहीं करते, आदमी का मन झगड़ा करता है। अगर आदमी अंदर से ठीक है, तो वह जहाँ भी जायेगा, वहाँ शांति बसा लेगा।

चाणक्य ने कहा कि जन्म से कोई किसी का शत्रु नहीं होता। व्यवहार ही शत्रु बनाता है और व्यवहार ही मित्र बनाया करता है। अगर हमारा अन्तःकरण निर्मल है और पवित्र है, हम प्रभु और राष्ट्र को साक्षी मानकर कार्य कर रहे हैं, तो वहाँ चारों तरफ शांति ही रहेगी, अशांति नहीं। अगर हम संसार में स्वार्थमय व्यवहार करते हैं, अहंकार का प्रदर्शन करते हैं, अपनी 'ईगो' पावर को साथ लेकर चलते हैं, तो हर जगह झगड़ा होगा, हर जगह कलह, क्लेश होगा। इसलिए भगवान कहते हैं, जो मेरे लिये कर्म करता है, जो मेरी सृति को मानस पटल से उतरने नहीं देता, हर घड़ी मेरा ध्यान करता है, वह राष्ट्र का ही ध्यान है और राष्ट्र के लिए ही है।

मनुस्मृति में शूद्रों की स्थिति ?

-डॉ. सुरेन्द्र कुमार

मनुस्मृति के अन्तःसाक्ष्यों पर दृष्टिपात करने पर हमें कुछ अत्यन्त महत्वपूर्ण एवं आधारभूत तथ्य उपलब्ध होते हैं जो शूद्रों के विषय में मनु को भावनाओं का संकेत देते हैं। वे इस प्रकार हैं-

१) दलितों-पिछड़ों को शूद्र नहीं कहा ? आजकल की दलित, पिछड़ी और जनजाति कहीं जाने वाली जातियों को मनुस्मृति में कहीं 'शूद्र' नहीं कहा गया है। मनु की वर्णव्यवस्था है, अतः सभी व्यक्तियों के वर्णों का निश्चय गुण-कर्म-योग्यता के आधार पर किया गया है, जाति के आधार पर नहीं। यही कारण है कि शूद्र वर्ण में किसी जाति की गणना करके ये नहीं कहा है कि अमुक-अमुक जातियां 'शूद्र' हैं। परवर्ती समाज और व्यवस्थाकारों ने समय-समय पर शूद्र संज्ञा देकर कुछ वर्णों को शूद्रवर्ग में सम्मिलित कर दिया। कुछ लोग भ्रान्तिवश इसकी जिम्मेदारी मनु पर थोप रहे हैं। विकृत व्यवस्थाओं का दोषी तो है परवर्ती समाज, किन्तु उसका दण्ड मनु को दिया जा रहा है। न्याय की भाँग करने वाले दलित प्रतिनिधियों का यह कैसा न्याय है ?

२) मनुकृत शूद्रों की परिभाषा वर्तमान शूद्रों पर लागू नहीं होती। मनु द्वारा दी गई शूद्र की परिभाषा भी आज की दलित और पिछड़ी जातियों पर लागू नहीं होती। मनुकृत शूद्र की परिभाषा है ? जिनका ब्रह्मजन्म = विद्याजन्म रूप दूसरी जन्म होता है, वे 'द्विजाति' ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य हैं। जिनका ब्रह्मजन्म नहीं होता वह 'एकजाति' रहने वाला शूद्र है। अर्थात् जो बालक निर्धारित समय पर गुरुके पास जाकर संस्कारपूर्वक वेदाध्ययन, विद्याध्ययन और अपने वर्ण की शिक्षा-दीक्षा प्राप्त करता है, वह उसका 'विद्याजन्म' नामक दूसरा जन्म है, जिसे शास्त्रों में 'ब्रह्मजन्म' कहा गया है। जो जानबूझकर, मन्दबुद्धि के कारण अथवा अयोग्य होने के कारण 'विद्याध्ययन' और उच्छ तीन द्विज वर्णों

में से किसी भी वर्ण की शिक्षा-दीक्षा नहीं प्राप्त करता, वह अशिक्षित व्यक्ति एक जाति-एक जन्म वाला' अर्थात् शूद्र कहलाता है। इसके अतिरिक्त उच्च वर्णों में दीक्षित होकर जो निर्धारित कर्मों को नहीं करता, वह भी शूद्र हो जाता है (मनु. २.१२६, १६९, १७०, १७२, १०.४ आदि)। इस विषयक एक-दो प्रमाण द्रष्टव्य हैं-

अ) ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः, व्रयो वर्णोः द्विजातयः । चतुर्थः एकजातिस्तु शूद्रः नास्ति तु पंचमः ॥ -मनु. १०.४

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, इन तीन वर्णों को द्विजति कहते हैं, क्योंकि इनका दूसरा विद्याजन्म होता है। चौथा वर्ण एकजाति-केवल माति-पिता से ही जन्म प्राप्त करने वाला और विद्याजन्म न प्राप्त करने वाला, शूद्र है। इन चारों वर्णों के अतिरिक्त कोई वर्ण नहीं है।

आ) शूद्रेण हि समस्तावद् यावद् वैदे न जायते । (२.१७२)

अर्थात् जब तक व्यक्ति का ब्रह्मजन्म-वेदाध्ययन रूप जन्म नहीं होता, तब तक वह शूद्र के समान ही होता है।

इ) न वैति अभिवादस्य...यथा शूद्रस्तथैव सः । (२.१२६)

अर्थात् जो अभिवादन विधि का ज्ञान नहीं रखता, वह शूद्र ही है।

ई) प्रत्यवायेन शूद्रताम् (४.२४५)

अर्थात् ब्राह्मण, हीन लोगों के संसंग और आचरण से शूद्र हो जाता है। बाद तक भी शूद्र की यही परिभाषा रही है।

उ) जन्मना जायते शूद्रः, संस्काराद् द्विज उच्चते । (स्कन्दपुराण)

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति जन्म से शूद्र होता है, उपनयन संस्कार में दीक्षित होकर ही द्विज बनता है।

मनु की यह यह व्यवस्था अब भी बलिदीप में प्रचलित है। वहाँ 'द्विजाति' और 'एकजाति' संज्ञाओं का ही प्रयोग होता है। शूद्र को अस्पृश्य नहीं माना जाता।

३) शूद्र अस्पृश्य नहीं ? अनेक श्लोकों से ज्ञात होता है कि शूद्रों के प्रति मनु की मानवीय सद्व्यवहारना थी और वे उन्हें अस्पृश्य, निन्दित अथवा धृणित नहीं मानते थे। मनु ने शूद्रों के लिए उत्तम, उल्कष्ट, शुचि जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है, ऐसा विशेष्य व्यक्ति कभी अस्पृश्य या धृणित नहीं माना जा सकता (१.३३५)। शूद्रों को द्विजाति वर्णों के घरों में पाचन, सेवा आदि श्रमकार्य करने का निर्देश दिया है (१९.९९; १.३३४-३३५)। किसी द्विज के यहाँ यदि कोई शूद्र अतिथि रूप में आ जाए तो उसे भोजन कराने का आदेश है (३.११२)। द्विजों को आदेश है कि अपने भृत्यों को, जो कि शूद्र होते थे, पहले भोजन कराने के बाद, भोजन करें (३.११६)। क्या आज के वर्णरहित सभ्य समाज में भृत्यों को पहले भोजन कराया जाता है और उनका इतना ध्यान रखा जाता है ? कितना मानवीय, सम्मान और कृपापूर्ण दृष्टिकोण था मनु का !

वैदिक वर्णव्यवस्था में परमात्मा पुरुष अथवा ब्रह्म के मुख, बाहु, जंघा, पैर से क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र की आलंकारिक उत्पत्ति बतलायी है (१.३१)। इससे तीन निष्कर्ष निकलते हैं। एक, चारों वर्णों के व्यक्ति परमात्मा की एक जैसी सन्तानें हैं। दूसरा, एक जैसी सन्तानों में कोई अस्पृश्य और धृणित नहीं होता। तीसरा, तीसरा, एक ही शरीर का अंग 'पैर' अस्पृश्य या धृणित नहीं होता है। ऐसे श्लोकों के रहते कोई तटस्थ व्यक्ति क्या यह कह सकता है कि मनु शूद्रों को अस्पृश्य और धृणित मानते थे ?

४) शूद्र को सम्मान व्यवस्था में छूट ? मनु ने सम्मान के विषय में शूद्रों को विशेष छूट दी है। मनुविहित सम्मान व्यवस्था में प्रथम तीन वर्णों में अधिक गुणों के आधार पर अधिक सम्मान देने का कथन है जिनमें विद्यावान् सब से अधिक सम्मान देने का कथन है जिनमें विद्यावान् सबसे अधिक

सम्मान्य है (२.१११, ११२, १३०)। किन्तु शूद्र के अति अधिक सन्दाच प्रदर्शित करते हुए उन्होंने विशेष विधान किया है कि द्विज वर्ण के व्यक्ति वृद्ध शूद्र को पहले सम्मान दें, जबकि शूद्र अशिक्षित होता है। यह सम्मान पहले तीन वर्णों में किसी को नहीं दिया गया है।

मानार्डः शूद्रोऽपि दशमीं गत) ।
(२.१३७)

अर्थात् वृद्ध शूद्र को सभी द्विज पहले सम्मान दें। शेष तीन वर्णों में अधिक गुणी पहले सम्मान का पात्र है।

५) शूद्र को धर्मपालन की स्वतन्त्रता ?

‘न धर्मात् प्रतिषेधनम्’ (१०.१२६) अर्थात् ‘शूद्रों को धार्मिक कार्य करने का निषेध नहीं है’ यह कहकर मनु ने शूद्र को धर्मपालन की स्वतन्त्रता दी है। इस तथ्य का ज्ञान उस श्लोक से भी होता है जिसमें मनु ने कहा है कि ‘शूद्र से भी उत्तम धर्म को ग्रहण कर लेना चाहिए’ (३.३१३)। वेदों में शूद्रों को स्पष्टतः यज्ञ आदि करने और वेदशास्त्र पढ़ने का अधिकार दिया है ?

**यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय
चारणाय ॥** (यजुर्वेद २६.२)

अर्थात् मैंने इस कल्याणकारिणी वेदवाणी का उपदेश सभी मनुष्यों-ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, स्वाश्रित स्त्री-भृत्य आदि और अतिशूद्र आदि के लिए किया है।

मनु की प्रतिज्ञा है कि उनकी मनुस्मृति वेदानुकूल है, अतः वेदाधारित होने के कारण मनु की भी वही मान्यताएं हैं। यही कारण है कि उपनयन प्रसंग में कहीं भी शूद्र के उपनयन का निषेध नहीं किया है, क्योंकि शूद्र तो तब कहाता है, जब कोई उपनयन नहीं कराता।

६) दण्ड-व्यवस्था में शूद्र को सबसे कम दण्ड आइए, अब मनुविहित दण्ड व्यवस्था पर दृष्टिपात करते हैं। यह कहना नितान्त अनुचित है कि मनु ने शूद्रों के लिए कठोर दण्डों का विधान किया है और ब्राह्मणों को विशेषाधिकार एवं विशेष सुविधाएं प्रदान की हैं। मनु की दण्ड

व्यवस्था के मानदण्ड हैं ? गुण-दोष और आधारभूत तत्त्व हैं ? बौद्धिक स्तर, सामाजिक स्तर, पद, अपराध का प्रभाव। मनु की दण्ड व्यवस्था यथा योग्य दण्ड व्यवस्था है, जो मनो वैज्ञानिक है। यदि मनु वर्णों में गुण-कर्म-योग्यता के आधार पर उच्च वर्णों को अधिक सम्मान और सामाजिक स्तर प्रदानकरते हैं तो अपराध करने पर उतना ही अधिक दण्ड भी देते हैं। इस प्रकार मनुकी यथायोग्य दण्ड व्यवस्था में शूद्र को सबसे कम दण्ड है, और ब्राह्मण को सबसे अधिक, राजा को उससे भी अधिक। मनु की यह सर्वमान्य दण्ड व्यवस्था है, जो सभी दण्ड स्थानों पर लागू होती है।

**अष्टापाद्यं तु शूद्रस्य स्तेये भवति
किल्विषम् ।**

**पोडशैव तु वैश्यस्य द्वात्रिंशत् क्षत्रियस्य
च ॥**

**ब्राह्मणस्य चतुःषष्ठिः पूर्ण वाऽपि शतं
भवेत् ।**

**दिगुणा वा चतुःषष्ठिः, तद्वोषगुणविद्धि
सः ॥** (८.३३७-३३८)

अर्थात् किसी चोरी आदि के अपराध में शूद्र को आठ गुणा दण्ड दिया जाता है तो वैश्य को सोलह गुणा, क्षत्रिय को बत्तीस गुणा, ब्राह्मण को चौंसठ गुणा, अपितु उसे सौ गुणा अथवा एक सौ अड्डाइस गुणा दण्ड करना चाहिए क्योंकि उत्तरोत्तर वर्ण के व्यक्ति अपराध के गुण-दोषों और उसके परिणामों, प्रभावों आदि को भलीभांति समझने वाले हैं।

इसके साथ ही मनु ने राजा को आदेश दिया है कि उक्त दण्ड से किसी को छूट नहीं दी जानी है, चाहे वह आचार्य, पुरोहित और राजा के पिता-माता ही क्यों न हों। राजा दण्ड दिए बिना मित्र को भी न छोड़े और कोई समृद्ध व्यक्ति शारीरिक अपराध दण्ड के बदले में विशाल धनराशि देकर छूटना चाहे तो उसे भी न छोड़े (८.३३५, ३४७)

देखिए, मनु की दण्ड व्यवस्था कितनी मनो वैज्ञानिक, न्यायपूर्ण व्यावहारिक और

श्रेष्ठ प्रभावी है। इसकी तुलना आज की दण्ड व्यवस्था से करके देखिए, दोनों का अन्तर स्पष्ट हो जाएगा।

मनु की दण्ड व्यवस्था अपराध की प्रकृति पर निर्भर है। वे गम्भीर अपराध में यदि कठोर दण्ड का विधान करते हैं तो चारों वर्णों को ही, और यदि सामान्य अपराध में सामान्य दण्ड का विधान करते हैं, तो वह भी चारों वर्णों के लिए सामान्य होता है। शूद्रों के लिए जो कठोर दण्डों का विधान मिलता है वह प्रक्षिप्त (मिलावटी) श्लोकों में है। उक्त दण्ड नीति के विरुद्ध जो श्लोक मिलते हैं, वे मनु रचित नहीं हैं।

७) शूद्र दास नहीं है-शूद्र से दासता करने अथवा जीविका न देने का कथन मनु के निर्देशों के विरुद्ध है। मनु में सेवकों, भूत्यों का वेतन, स्थान और पद के अनुसार नियत करने का आदेश राजा को दिया है और यह सुनिश्चित किया है कि उनका वेतन अनावश्यक रूप से न काटा जाए (७.१२५-१२६; .२९६)

८) शूद्र सर्वण हैं-वर्तमान मनुस्मृति को उठाकर देख लीजिए, उनकी ऐसी कितनी ही व्यवस्थाएं हैं, जिन्हें परवर्ती समाज ने अपने ढंगसे बदल लिया है। मनु ने शूद्र सहित चारों वर्णों को सर्वण माना है, चारों से भिन्न को असर्वण (१०.४.४५), किन्तु परवर्ती समाज शूद्र को असर्वण कहने लग गया। मनु ने शिल्प, कारीगरी आदि कार्य करने वाले लोगों को वैश्य वर्ण के अन्तर्गत माना है (३.६४, ९.३२९, १०.११, १०.१२०), किन्तु पवर्ती समाज ने उन्हें भी शूद्रकोटि में ला खड़ा कर दिया। दूसरी ओर, मनु ने कृषि, पशुपालन को वैश्यों का कार्य माना (१.९०), किन्तु सदियों से ब्राह्मण और क्षत्रिय भी कृषि-पशुपालन कर रहे हैं, उन्हें वैश्य घोषित नहीं किया। इसको मनु की व्यवस्था कैसे माना जा सकता है ?

इस प्रकार मनु की व्यवस्थाएं न्यायपूर्ण हैं। उन्होंने न शूद्र और न किसी अन्य वर्ण के साथ अन्याय या पक्षपात किया है।

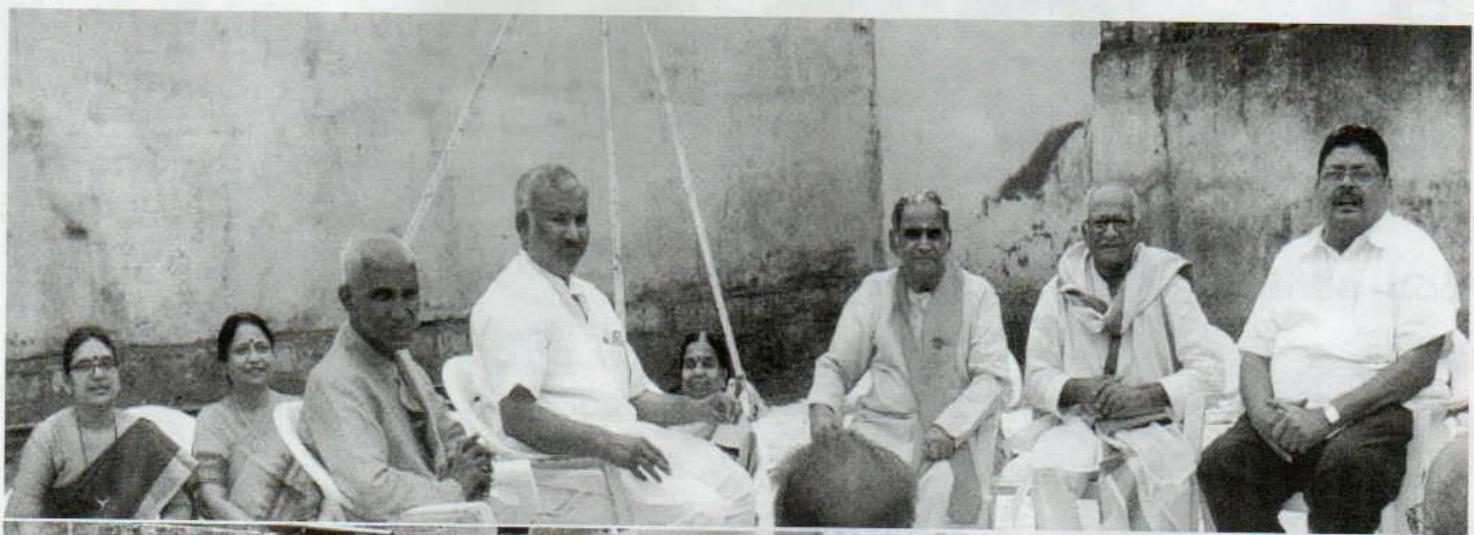
ఆర్య సమాజము రాష్ట్రపతి రోడ్ (జీరా) యొక్క నూతన భవన శంకుస్థాపన

ఆర్య సమాజము రాష్ట్రపతి రోడ్ (జీరా) యొక్క
నూతన భవన నిర్మాణమునకై యుజ్ఞము తరువాత
శంకుస్థాపన నేడు 16-06-2023 శుక్రవారం రోజున

ఓ. 11.00 గంలకు జరిగినది.

ఆర్య సమాజము అధ్యక్షులు శ్రీ మాశెట్టి శ్రీనివాస్ సపుత్రివారముగా
అధికారుల అందరి సమక్కంలో మరియు సికింద్రాబాద్కు సంబంధించిన
ఇతర ఆర్య సమాజముల అధికారుల సమక్కంలో శ్రీ పండిత్ వేదశ్రవ, ఆచార్య
హరికిష్ వేదాలంకార్ గాలి బ్రహ్మత్వంలో యుజ్ఞం చేశారు. యుజ్ఞం చేసిన

తదుపరి భవన శంకుస్థాపన ఆర్య ప్రతిసిథి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ
అధ్యక్షులు శ్రీ విరల్ రావు ఆర్య గాలి ద్వారా చేయించారు.



ఆర్య జీవన

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పత్ర పత్రిక

Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., L.L.B., Sahityaratna.

Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.

Phone : 040-24753827, 24756983, Narendra Bhavan : 040 24760030.

Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు అర్య, ప్రధాన సభ.

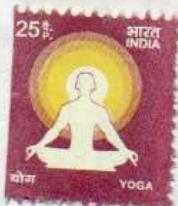
To,

Secretary

Arya Pratinidhi Sabha,

Delhi, 15-Hanuman Road,

New Delhi



పదవ తరగతి ఫలితాల్లో దయానంద విద్యా మందిర్ ఉన్నత పాఠశాల మహబూబ్‌నగర్ విద్యార్థులు



పదవ తరగతి ఫలితాల్లో దయానంద విద్యా మందిర్ ఉన్నత పాఠశాల మహబూబ్‌నగర్ విద్యార్థులు ప్రభంజనం. సంస్కరంలోనే కాదు చదువులోను దయానంద విద్యా మందిర్ పాఠశాలకు ఎవరూ సాటి లేదు అని మరొకసారి బుజువు చేసిన దయానంద విద్యా మందిర్ విద్యార్థులు. 100 శాతం ఉత్తీర్ణతతో పాటు స్వర్ణకుమారి 10 గ్రేడ్‌ను సాధించి, 10 GPA & COE సెంట్రల్ ఆఫ్ ఎక్సిటెన్స్-కరీంనగర్‌లో నీటు సాధించిన దయానంద విద్యా మందిర్ ఉన్నత పాఠశాల విద్యార్థి స్వర్ణకుమారిని జిల్లా విద్యార్థాధికారి గౌరవ శ్రీ రవీందర్ గారు పుష్టగుచ్ఛంతో అభినందించారు. 2023 సం॥రంలో ఉత్తమ గ్రేడ్ GPA10/10 సాధించిన యం. స్వర్ణకుమారిని అభినందిస్తున్న పాఠశాల యాజమాన్యం గౌరవ శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య గారు, డా॥ మురళీధర్ రావు గారు, ఆర్య సమాజ్ అధ్యక్షులు డా॥ భరద్వాజ్ నారాయణ రావు గారు, ప్రధానాచార్యులు శ్రీ నరసింహ రెడ్డి గారు.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర. -తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com

సంపాదక : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభా నే సభా కి ఓర సె ఆకృతి ప్రిన్స్, చికిటపల్లి మె ముద్రిత కావా కర ప్రకాశిత కియా ।

ప్రకాశక : ఆర్య ప్రతినిధి సభా, ఆం.ప్ర.- తెలంగాణ, సుల్తాన్ బాజార్, హైదరాబాద్-500 095. Narendra Bhavan Ph : 040 24760030.